

ASMA ARCHIVES
2096 I
ASMA ARCHIVES
2096 I

[illegible]

लुयागिनी गण॥ कालागिरे न वीवज्ज काठियागि न्यासि ता॥ कालिका यैरुन वज्ज पवतु सीमहाय
 ॥४॥ वका कक निवासि न्यायागि न्याघा न विक्रमा॥ गुह्य काल्या ४५ सादार्थ यूजनी या ४५ थक मे॥ वलि
 कानक वा मधु त्वहू नी वहु विक्रमा॥ वल्लु ग्रावर्चिका वल्लु पवतु न्यायिका॥ तलु दा वन तलु सा सा
 ॥४॥ वका विदव ता॥ धनै यानि वलिर्गव ७ मर्तु मधु धानर्त॥ कया लधानर्त काधं ललिहाना कर्क तथा॥
 प्रत्या वन लम के का मूर्त्ती सै दर्नय क मातृ॥ उमूला क मा वस्य वैन्द वानै य द च्चन॥ सीहान कम पूजे या
 यागि ते न्य उ यासि ता॥ विन्दु मान स्य गूला ना सुखि यूजति गायत॥ नाऊ से साध के ४ मिद्वे ४ गन्ध वा सन
 सांग ते ४॥ नाऊ विरि सन की के ४ यूजित य ४ सन कि रि ४॥ वल्लु पवतु मालि उ विखलु खलु न ववा॥ व

काठिकाटि महा प्रवतु यागिनी या इक खान मशाः त्या वन लम स्य र्थ यून ध्वये व दर्जयत॥ पून दीया त्म
 काल्य महाने वय मर्वयत॥ तत ४ स्व वाम राग कल ग स्य वय न्निमा यै व का ल सु विन्दा र्थ लिखि त्वाम
 त्य मूड या॥ धूयि तानि महा धूये ४ ब ५ या गत्य रु पूरु यत॥ ऊऊ मा दी न्म स्य र्थ पाऊ श्रवति मा वन रु
 तादि वलि च यून र्त्वा द या डु कु वलि यून ४ त ता राग वलि दत्वा सम सा र्था वलि यून ४ सम या र्था वलि
 यम्भत तत ४ कि लि कि ला सु का त्॥ यम्भ त्वलु वलि दत्वा दत्वा न क वलि यून ४ न ना न्य महि वा मा र्ज म
 खा ह सि मू ल म्भ म्भ ४॥ न बा म कां सम ग्र्थ वा वलि दत्वा वि व रुत ४॥ ले व वा क क वलि यागि न्य स्य कर्क तथा॥
 तता मा त वलि दत्वा व धी वलि मा वन ॥ वी न रु क वलि दत्वा लो वत्त सु वलि तथा॥ सामान्या र्थ सिका

मन्त्राणि किंवा उच्यन्ते साधयन् ॥ स्वास्मदीये वयागनि विधिवत् पूजयितुं ॥ ततश्च किं समर्थं यथा ॥ द
त्वा यथा विधिः ॥ तच्छुद्धं पात्रं संभ्रम्य प्रतिष्ठाप्य गुरुं यजन् ॥ निवेद्य पुनर्वपात्रं वासनारुणानि व
गायन् नारावतलुप्यं तदहो वस्वयेतु वा ॥ सुत्वा गुरुं समासाद्य गच्छिन्मन्त्रं तद्विधिवत् ॥ ज्ञात्वा यत्रैव
येयीत्वा वीनान् संवृष्टं तथैव ॥ अक्षय्यदीपमाली वक्त्रदीपान् च दर्शयन् ॥ देवीं मूलनसंतर्धे स
हस्रं वा तदर्धं कीर्तयन् देवागर्तं वापि यथा गच्छात्सु तथैव ॥ इयं समर्थं तत्पुनश्च गच्छात्सु निवेद्य
वा ॥ विन्दुं दत्वा त्रिकाक्षं नम्रा पात्रं विंदुं तथैव ॥ वाक्छा मन्त्रं तद्वत्त्वा पुनश्च संतर्धे कालिकां ॥ सा गुरु
श्च नैकविधादिगीतवाद्यादि नरुने ॥ यत नैव मनो हर्मिष्ठं नृणां नैव यादि हिंसा विधिना वलि मृदाया

दत्वा पूष्णीं जलिरुयं ॥ ज्ञायात्रैव स्वयेयीत्वा मन्त्रिका ये समर्थं यन् ॥ नकादकनदवी वतर्धे यित्वा
तावधि ॥ यन्निवानां समूहास्य मूलमंजो समंततः ॥ रुदयाम्बुजमक्षवगुच्छकालिं समुद्धृतं ॥ ६
गच्छिन्मन्त्रं पठित्वा तु विहनन् यथा सुखी ॥ अथ मन्त्राक्षको संस्थाप्यास्य विधिवत् ॥ ततश्च
अथ मन्त्राक्षको ज्ञायात्पुनश्च देवैव ॥ पूष्णीं जलिसमर्थं यत्पुनश्च पूजां विधाय वा ॥ यथा यथा नमा
त्तैव देवी कविधिनाथवा ॥ यदा समस्ति मंजुसूजां क्रूर्यादतं डिता ॥ समस्ति यस्मिन् देवासीयुक्
काली प्रसीदति ॥ दशकालान् सावत्तयच्छिद्वर्जा समावनन् ॥ अदशकालं दोर्वर्त्य वात्तवर्द्धते
नयि ॥ समस्ति दशया काली दशनीयास्व गच्छिन् ॥ समस्ति दशयेतर्धे कालिका सुखं प्रसीदति ॥ ७ ॥

अथ सायन नी संध्या कृत्वा साधक सरु मष्टा मय जे मन संध्या सक विमति संध्या की ॥ यश्वि मारि म
 खा वी नः समुपस्थाय सर्व वत् ॥ दीप माला दिता नो र्थे महा धूयेथ धूवि ते ॥ गत्वा वीना महा कारि
 यज्ञ यथाग मे उय ॥ जिष्ठ की स समाश्रित्य दर्श कृत्वा विधान विद् ॥ गले गव दूकानी वक्र मानी ली वि
 लष तः ॥ विगिष्ठ दर्श कर्तुं य मे उ सिद्धि मही सगा ॥ न इ कै य व व र्क व न व व र्क ग ले ग व नी ॥ क
 मा नी म व र्क ना म ले क ल्या ज ना दि हि ॥ ग ले ग व दू का दी ग्य त द ग व व र्क व यत् ॥ यं या य वा न
 मा र्गैः सम स्मि मन ना ज यत् ॥ दृष्ट्या ज ति उ यं कृत्वा यं व प्र ल व मूल तः ॥ क मा नी द व र्क ध्या य न य
 ध ग कि ज य न म र्नी ॥ त ता वि स र्क डं जी त वी ने सह स ग कि के ॥ ॥ अथ ई ना ठि की संध्या कृत्वा प रु

न सर्व वत् ॥ वी न ड ये न न के ग्य साध ने सह साध क कः ॥ गत्वा महा म ग न ना नी न त्ये ती का लि का
 य ज त ॥ रू त व ताल डं दू के का क गृ ध नि ग व ने ॥ वाल व दू य वा य ने ॥ यि ग य वे र्क ना ज से ॥ या गि
 नी रे न वा ग य य नि वा न ग ले ॥ सह ॥ ख व ने रू व ने यं के ॥ न क मा ली ला जि हि ॥ न त्य हि र्गी य मा
 ने ग्य ग र्ज ती गु क का लि का ॥ य ज य इ क मा र्गैः महा वी न ति नि र्क य ॥ गी गु र्नी य न या रू क ता य य द
 वि ल दि हि ॥ गु रू मू ला ॥ जिया ॥ सर्व गु रू मू ला दि सि द्ध य ॥ तं य न स्तु त्य क र्त्वा त न स य रू क दा व न ॥
 उ क ने क न मा र्गैः य ज यित्वा व का लि का ॥ सर्व क मा लि मे रू स वि ध ना वि ध न वि ॥ व लि क मा लि
 क र्त्वा त नि नी धे उ वि ग य त ॥ त तः स ल क ल म की का ना मा नू ट यो व नी ॥ स रू य य न या रू क दा वी मा वा

नावाकृतद्रुगोसमस्मिन्निमा (मैतकिं वायं वायवानतः)। पुष्ककाली रुगव्यायन् यथागकिं जय
मने॥ विस्मयदवर्गावीनतया सहयिवनाध॥ रुक्मावीनगलेऽसार्द्धं तया सहनिवगयन्॥ धीना
दवीमने॥ आयन्तदाकालीमने॥ जयन्॥ हेनवीहेनवाकानमात्मगच्छाननस्मनन्॥ नृदेतहावनावि
श्चनिर्विकल्पं मशगय॥ विंश्यातनिवानेदं रावयित्वा निवान्मनि॥ गकिसेवंधर्जनेर्जसमाधिक
लमानसः॥ अथल्लयमहावीनेस्युक्तामेववाविता॥ यानिर्लिङ्गवसंस्त्यतल्लयं रुकुमिञ्जितः
॥ तनतायनमशुवीनानिर्विकायागतमः॥ वावितातयथद्वेभूतमेतल्लाधकः॥ अश्वाकूनग
नवापितदईवातदईकी॥ तययित्वा महाकालीयेतवाथजिताक॥ पृथ्वीर्जलेविशयाथमस्तमेत

नसाधकः॥ इदिद्वेभूतसमस्तस्य विवन्तयथसुखं॥ ॥ अथनयामिनीसंश्चीकृत्वापल्लानद्वे
दन्॥ येवायवानमातलसमस्मिन्मननागिनी॥ यश्चिमा (मैतवा दृशी कृत्वा जह्वा मनेततः)॥ वृथ्या
जलिउयेकृत्वा नमस्तुत्वा विसर्जयन्॥ यातनादिषु संश्चासुर्यवतत्वयथाक्रमी॥ येवानां गुरनाथ
नीजकेकेकुन्मर्वयन्॥ येवस्वयिवकालं रुकुष्ककालीसमर्वयन्॥ अगकः॥ येवकालं वृथद्वे
जामहात्सव॥ पृथ्वीर्जलिउयन्मविसमस्मिन्मननापिव॥ यातः॥ दृजितपातल्लः॥ सुधया दृजयन्कि
वी॥ येवकालं वृथः॥ संश्चीकर्तुनक्रमननः॥ यातनाकश्चवाकृर्यान्वायन्निर्लार्थमावनन्॥ यात
संश्चामकृत्वा उमश्चाकृसमपल्लितः॥ अदोमश्चाकृकीकृत्वा यातः॥ संश्चामथवनन्॥ उयश्चिनादि

कलिमलदलनीगुक्ककालीनमामि॥ वासागर्भकघृतिनद्वितीयासमसहस्रेष्टयम्वंशीकृमाविकीक्रीडन
स्वविरुमीदग्भननीयातमूयासनीया॥ नीलश्रीनादिश्रुतिनदिहस्तकूचवयासिचिन्मनूयं। मध्याह्न
कालयनिविननीयासंज्ञारुयेतीभवमादवत॥ नोडीहनिडाडिनिशयवयात्रुहाहहसंप्रकटाप्रदेती
। सार्यतनसापविचिन्नीयाकपालस्वर्णकिंतवाश्रुजाला॥ यग्नकालयतयाग्निसंनिहापिभववता
लुग्नमलवद्विता। निगीधकालयनिविननीयानीवीतनकानूतदीर्घजिह्वा॥ यनामृगानन्यनसारितका
स्वसाधकावीरुसुविस्मितासा। निग्नकयाभसुविर्वितनीयादिनाककालनडुगुक्ककालिकी॥ नकापिना
नाविधरिन्ननूयीदग्भननादगिककामधेनीउग्रयनूयंस्वसाधकानीस्ववालकानामिवकगनीसा॥ - ॥

ॐ निग्रायवमहं सपवित्राङ्गकाचार्यश्रीविश्वार्नदनाथगिखानित्यानेदनाथविवर्तिनसमायं॥ ॐ ॥
कलमस्वयनेवगुक्ककालीमनधूना। त्रिकालीवक्कातवुरुवदासंमत्स्यमूडया॥ विधायसाधकं ४ स्वा
यवामरागयथविधिं॥ नृकसंज्ञात्रिनाक्षरंमहाधूपनधूपिनी। मंजुलसंप्रतिष्ययपूजयद्विजिमलु
लं॥ यंदयनंश्वसंदययंदयनवद्वर्क। गजधनंप्रतिष्ययकैरुवविधिसंस्कृतं॥ नविमंजुलमस्य
च्यर्गंधपूज्याङ्गनादिरि॥ तन्मध्वनवननानिनिजियन्मलविधया। प्रकाल्ययवितादीयानश्चदिश
विवक्ता॥ धूपयित्वामहाधूपे॥ कलमवर्तमानरु॥ नमावक्ककयालायनमाविष्कयातिन। नमा
नूडकयालायनमाव्गीभकयातिन॥ सदागिवकयालायनमहसामकयातिन॥ नमः॥ सूर्यकयालाय

नमाविष्कयालिना नमावकाउलीजययेवयववपूर्वकै। पूजयित्वा कया लानि नवानिकल (मयविहारे
नवाकै समस्य च तता मा तगले १५५। वीकलीया कलीधने ३ (मधितं यत्यना मते ॥ नाना मृतनस्य
कलनै मूलविद्यया। सामर्मउलमस्य च तजवाया मृतनयनी। येवयेवाकानेस्य च तमै १ सकृदा जयनु॥
मूजाकै यदर्थथ कत्वा मयविमावने॥ यद्युतिनस्कविनी विद्या कृत्वा ते वै सकृदा॥ सामस्यया विवा
ययया मा मृतमथर्वयत्॥ ज्ञानन्दहे नवमर्न सुखदवी मर्न तग १। यज्य सकृदमर्नी मूलमै ३ मथा क
ध॥ येवकाली समस्य च नेवयेवयवयत्॥ पूनमूर्जा यदर्थथ ना विमित्य नर्वितयत्॥ जवे ३ (मधितं ५५
येववता नाधनकर्म। ज्ञ (मधितं कल ५५ येवा गृह्णाति ददाति वा उरु तो येति तो स्या तामै १ न न कराति

नो॥ ज्ञसंस्कृतं सुनायानं ननकया वि ३४ खर्द। ज्ञयू ४ कीर्ति यज्ञा लक्ष्मीधर्म विद्या विमर्दक ४॥ वालवृक्षा उनाली
उदवना ज्ञानवर्लिनी। गुनसूत्रका नीव मार्गस्थानी प्रवासिनी। उद्यद्युद्धिय कार्मै ३ वक्षसै ज्ञयमा मृत ४
॥ गुत्रया दाम्बुर्न स्मृत्वा कली तज्ञान तत्यन ४। ज्ञथामि नविगीती गु कलारि ४ पूनत्तथवा॥ विधाय धनूया
न्यादि मूर्जा सै दर्मयत्त मा ग॥ ज्ञमृतनिमर्न कृत्वा सकृदमयमावने॥ येवकाली विलिख्याथ येवको
ली यदर्थव॥ सकृदमूलमै १ वक्षस्तु द्विविरावयत्॥ सापि गत्तु लमा प्राति गुत्रव वा उका नदी॥ न इत्य
मधने वक्ष कलया गीत्त वैदिन। विद्गुरुजिकाली उविलिख नमस्य मूडया। तज्ञा धर्मपतिश्च ययेव
नवपूर्वकै॥ येवयत्तानुसमस्य च तजवा १ निधाय व॥ नमावका उरुल्लयति सै द्यरा कनी॥ वीर ५

योनिसंकेतश्च द्रुदि मूलमनस्मनः॥ ललितुनीयदग्धध्यातुमवहयन्मनी। महामासैतन्म
 किंकिन्नित्रियमस्तु न॥ ननास्ति कतधूयनधूययित्वागुर्स्मनः॥ गुड्विहवय द्वावातिर्विकानव
 वतसा। गुधुगुद्विविहगुंउ मनः॥ कस्त्युवहि॥ गिवगकि मयैसर्वध्यायतायागिनः॥ सदा। व
 द्वा। मंउलं सर्वगुद्वमवनसंगयः॥ स्वयं गुद्वगुलुद्विवि वीनवियर्थयत्॥ ॥ इति कलगस्त्वयने
 ॥ **ॐ नमः** प्रीयनदवताये॥ अथ श्रीगुधकात्या **महावक्रवृजविधिर्विख्यत॥** मूलतयात्पयामुयैकत्वा
 दवीवक्रवृजमहं कनिध्या॥ इति संकल्या॥ गंखकलगविमयाद्यानिस्त्वययत्॥ वी० वृजं कुर्यात्॥ नयथ
 ॥ अकतयुगमृष्टसनायनमः॥ अमगदिवउर्वदमृष्टसनायनमः॥ अरुडादिलाकपालमृष्टसना
 दि

यनमः॥ अस्विल्लितिसंहारनाख्या रासामंजसनायनमः॥ अर्थवयतासनायनमः॥ अमाहरेनवा
 नवगकि मंजसनायनमः॥ असदागिवायमहायतयप्रासनायनमः॥ अवैपी० वृजानंतर्न महाधूय
 नधूययित्वा कालिकापैजन विंशवक्रदवीमावाहयत्॥ नयथा॥ **मूलं** ॥ **ॐ नमः** मारुगवतिवार्मि (उक्तं
 रुतत्रस्वद्विनिगु ककालिक सर्वकर्मकवीजं **ॐ नमः** वृजवैठकिलि महागम
 नरेनवि वउ० वृजिम म्मीरुद्यातिनि **ॐ** महारधिवर्मासामिति महायप्रवनारुस्त्वयादि अस्मिन्म
 उत्कालिकापैजन वक्रसोनिधं कुर **ॐ** नमः॥ इति मंउलश्रु कविधानन तउदवीमावाक।
 रावाहनादियैवमृजानंतर्न मृजवृजं दग्धमंउगययादधीगतिवार्मि अक। नदीयवदनरुद

यथात्मनश्चति काथा। यत्तु गनवव कन्या सान्निध्यय॥ पाथार्थावमनीय मध्वय क्वचिमनानक नैजीया
जामृतनमस्तन जिवा नैदवी सैत र्था॥ मूल अलुय वैतु मारुठि लिखेज खैतुव झाकाठि मरुयवतु
यागिनीयाइ केखानम॥ इति समष्टिमननावसकसैत र्था॥ यैवमडा कर्कषद र्था॥ दृष्ट्यर्ग (भाद
कशीनातिनक शुद्धाद कर्कस्रानै कावयित्वा। वासनारु नैगन्धय्यधूयदीयानै विषया। दवी म
सनयथ मर्किसैत र्था॥ इति सैवकायनम॥ जौमिवावकायनम॥ हूंकविदकायनम॥ मी
रुसूकवकायनम॥ हूीतार्कवकायनम॥ जौमकनवकायनम॥ जौगजवकायनम॥ जौत्रयव
कायनम॥ हूँननवकायनम॥ इति वक्रदूजानैतन मायूधयर्ग क र्था॥ तथथा॥ हूँविदुतायन

म॥ स॥ नृकयालायनम॥ हूँखद्वीगयनम॥ जौयागयनम॥ जौनकयनम॥ जौखद्वीगय
नम॥ जौमंगलायनम॥ हूँधनूखनम॥ हूँवकायनम॥ हूँचछयनम॥ जौमेलायनम॥
हूँकंकालायनम॥ जौनकूलायनम॥ हूँसूर्यायनम॥ जौकृदित्येनम॥ जौवंगयनम॥ हूँ
यत्तुमायनम॥ जौउठिकायनम॥ जौवक्रियायनम॥ हूँजिठिमायनम॥ जौव॥ श्रवायनम॥
॥ जौत्रयमायनम॥ जौसिंहायनम॥ जौवक्रमायनम॥ जौमद्रनायनम॥ हूँउमनूकायनम॥
॥ इति वाम॥ अथ दक्षिण॥ जौविदुतवटिकायनम॥ हूँकलूकायेनम॥ हूँतर्कित्येनम॥ जौनै
कयनम॥ हूँदछयनम॥ हूँकलगयनम॥ जौजिभूलायनम॥ हूँवात्मयनम॥ हूँयमाय

नमः॥ गेंयू रुकाय नमः॥ कूं कृन्नाय नमः॥ ह्रीं पात्रिजाताय नमः॥ हूं कृत्रिकाये नमः॥ ध्रीं ताम्र
नाये नमः॥ गेंयू व्यमाताये नमः॥ हूं ठिं ठिमाये नमः॥ ह्रीं गृध्राय नमः॥ ह्रीं स्वस्तिकाय नमः॥
ह्रीं वह्निन्ये नमः॥ ह्रीं कर्मजलवन नमः॥ वयं ह्यश्विन नमः॥ ह्रीं पीशुमश्चे नमः॥ ह्रीं तैद्यावर्त्तय न
मः॥ कूं कृष्णाय नमः॥ ह्रीं मीसखं जय नमः॥ ॐ मातुलंगरुताय नमः॥ ह्रीं सूत्रे नमः॥ ह्रीं त्याय
यज्ञा॥ ॥ तता विन्दव युर्वैव कडा च उय पूजा॥ तता महधूय नधूपयित्वा॥ यत्रिता दीपा ह्व
य काल्य॥ सविन्मय महादविपना मन्त्रं सखिय॥ नृन्नी कालिक दहि पवि वा नार्चना यम॥
ह्यनृन्नी लुगु॥ नरा वनत पूजी कथ्यन्ति॥ तद्यथा॥ यथ मेति शूला ह्वक॥ उष्मा हरुदक च काय

नमः॥ नृति संप्रदाया॥ वाल्मिकी समानृती तिभूली कि त वा हवः॥ मृदुमालाध नात्रोडी वहुदव्यः॥ यनाहु
मी॥ उरुनादिवा मावर्त्तन पूजयन्॥ ॐ हूं महा मंजु कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ हूं
वस कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ हूं कम कालिका म्वाग्रीया इका म्पूजयामि तर्पयामि नमः
॥ ॐ हूं कात कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ हूं गगन कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि
नमः॥ ॐ हूं हासा कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ हूं गद कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि
तर्पयामि नमः॥ ॐ हूं वलु कूट म्बनी कालिका म्वाग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ह्रीं वलुकी वाचक म्बनी
ग्रीया इकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ नृति वक्र म्बनी मध्य संप्रदाया॥ एताः समस्त यागिन्या उष्मा हरुदक च

कृत्वा ॥ सायुध ॥ स्वाहना ॥ सयनिवाना ॥ सर्वोपवासे ॥ यज्ञिता ॥ सु॥ ॥ पृथ्वीं जलिसमर्प्य ॥ धनमूर्जय
दर्जय ॥ ॥ इति यथमावर्तनी ॥ ततः ॥ वाउगदल ॥ श्रीकालसंमाहनवक्रायनमः ॥ शुद्धवाहनमानूयमांसा
लीमदविउमा ॥ मृदंगतालवादिन्यः ॥ यवकुंयाडमीसदा ॥ उरुवादिवाभावर्तन ॥ ॥ जमनकालिकाग्राया
इकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ रुक्माविहीकालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ सिंह
कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ धर्मश्वरी कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिन
मः ॥ ॥ कर्लकिही कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ डाविही कालिकां वाग्रीयाइकां
पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ लीलावती कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ उन्मनी

कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ चूनि का कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥
॥ कूका न कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ ॥ रुक्मा कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पय
मिनमः ॥ ॥ नादिनी कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ मायिनी कालिकां वाग्रीयाइकां पूजया
मितर्पयामिनमः ॥ ॥ स्वामिनी कालिकां वाग्रीयाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ हासिनी कालिकां वाग्रीया
इकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ स्वाहा ॥ ॥ नौ नौ न क वल्लवक श्वनी ग्रायाइकां पूजयामितर्पयामिनमः ॥ ॥ इति
वक्रश्वनी मूर्जय ॥ ॥ ततः ॥ समस्तवैज्यागिन्यः ॥ कालसंमाहनवक्र सांग ॥ सायुध ॥ स्वाहना ॥ स
यनिवाना ॥ सर्वोपवासे ॥ यज्ञिता ॥ सु॥ ॥ ॥ इति यानिमूर्जयदर्जय ॥ इति द्वितीयावर्तनी ॥ ॥ ततः ॥ वाउग

दल॥ कात्सर्माहनवकायनमष्टाङ्गतिर्सेदय॥ काकवाहनमान्दयखड्गमूँकवाहन॥ मालुँडयामि
नीर्सेद्यावाउमा मृगमूर्हय॥ दूर्वादिवाभावर्हण॥ जौं गौं दुँ सुखिकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः
जौं गौं दुँ स्त्रितिकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ सैहवकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्प
यामिनमः॥ जौं गौं दुँ हँ सुकातीश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ यमकातीश्रीयाइकाँदूजयामि
तर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ कात्सर्माहनकातीश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ कात्सर्माहकातीश्री
याइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ वक्रवतीकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं
गौं दुँ वीनवीनवतीकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ महाकतककातीश्रीयाइकाँदूज

यामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ वक्रवतीकातीश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ कात्सर्माहकातीश्रीयाइ
काँदूजयामितर्पयामिनमः॥ सुवैठजीवकवतीश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ स्त्रितिवक्रवतीर्सेद
य॥ जगता॥ समस्तमालुँडयामिन्य॥ कात्सर्माहकवक्रवतीश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ सायुध॥ सवाहना॥ सयनिवावा॥ सचि
पवावे॥ दूर्जिता॥ सैउ॥ लिंगमूर्जीप्रदगय॥ स्त्रितिवतीयाववती॥ ॥ ततादल॥ कात्सर्माहवक्रवतीकाय
नमः॥ स्त्रितिर्सेदय॥ सिंहवाहनमान्दयमीसंभतिरयालय॥ महानिखुँडयामिन्य॥ वाउमीनकावास
सा॥ उरुनादिवाभावर्हण॥ जौं गौं दुँ वक्रवतीकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ वक्रवतीका
लिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥ जौं गौं दुँ कोमावीकालिकाश्रीयाइकाँदूजयामितर्पयामिनमः॥

ॐ देवु वी कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ वा ना ही कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया
मित र्वयामिन म॥ ॐ ग कु व ती कालि कां वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ वा मू लु कालि कां
वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ व लु का कालि श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ व
लु वि क मा व क म्ब नी श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ ता ४ पि र व लु या गि न्य ४ का ल वि डा व ले व क सां
ग ४ सा य ४ सु वा हु ना ४ स य नि वा ना ४ स र्वा य वा ने ४ पू जि ता ४ सै उ ॥ ॐ म नू मू डा ४ द र्ग य ॥ ॐ ति व
उ र्ध व न ह ॥ ॥ त ता न व का ले ॥ श्री का ल मू ल्य हु ना य व क्रा य न म॥ ॐ ति सै र ४ म हि वा स न मा नू
रा द लु या ग क ना य ता धा ना त्र खं उ था गि न्य ४ या उ के का ल कू उ ला ॥ य म्बि मा दि वा मा व रू न ॥ ॐ न क

कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ म लु सु कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥
ॐ म लु य म कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ म लु मू ल्य कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया
मित र्वयामिन म॥ ॐ म लु रु ड काली कालिका म्वा श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ म लु हा ॥ ॐ य न मा र्क का
ली श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ म लु मा रू लु काली श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ का ला
पि काली श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ मू ल्य ४ य ४ क काली श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ व
लु म व क म्ब नी श्री या इ कां पूजया मित र्वयामिन म॥ ॐ ता ४ स म सा ४ खं उ था गि न्य ४ का ल मू ल्य हु ना य व क
सां ग ४ सा य ४ सु वा हु ना ४ स य नि वा ना ४ स र्वा य वा ने ४ पू जि ता ४ सै उ ॥ ॐ म ॥ ॐ ति मू ल्य व न ह मू डां द र्ग य

ता॥ इति यैवमां वनही॥ ॥ तत ४ यैवका॥ ता॥ का काल संहनन वक्रा यन म॥ इति मयैव॥ मृगमलवाहन
नूयन नवताल यातय॥ उक्ता ह्युयागिनी संधावसी दृष्टु सदा म॥ उरुनादिवा मावरुन॥ ॥ महा
विजय नवावदिति स्वैरुववन वन॥ गिवन्नकसु कसु महाहे नव महाहे नवमहिनि कवी नयन
यना॥ यन सुवीधिक मूच्य मन्म मना न्मनि के वस्थनि र्वातु ह्ववृह मक सुहाव सुखी स्वनि खुंरुंरुं
स्वाहा॥ सुदिग्वनी कालिका म्वाग्रीया इकी यज्ञया मि तर्पया मि नम॥ ॥ महाहे नव सर्वथा यन क
नी स्थिति वाध सै दृष्टु लुक्त रुववंधनि धीनि यन मगिवलु ह्ववृह सुखिनि मना न्मनि गिव म
म्वन मन्म सर्व म्वनि धाव विचैध्वन यनि मि त न जानि नम महा वलु य वा क मयन याम वाहि

निन्नवता नय खुंरुंरुं खुंरुंरुं स्वाहा॥ स्थिति कालिका म्वाग्रीया इकी यज्ञया मि तर्पया मि नम॥ ॥ महा व
ह्युयाग म्वनि महा वलु क म सै सा धिनि सर्व सै हा वि ति जगत्कारु का वि ति महा काल सै क वि ति महा रु
ज रु क लि महा नै ड का धिनि सर्व म ऊ य म दि नि महा या य य मा वि ति या ग सि धि उ दा यि नि रा ग मा उ
य द खुंरुंरुं खुंरुंरुं खुंरुंरुं रु ग व ति सै हा न म्वनि खुंरुंरुं स्वाहा॥ सै हा न म्वनि कालिका म्वाग्रीया इकी यज्ञया मि
तर्पया मि नम॥ ॥ महा वं उ व लु मूख व ह्युयाग म्वनि व लु इ श्व वि मा वि नि न जा म यि च का य
क सु नू पि ति सु र्व सि धि उ द र सु र्व दा या ना ग य र सु क ला हि म नै म य य क र नू य स नू य सु र्व वि ध म्व
नि खुंरुंरुं स्वाहा॥ न ना र्थ म्वनी कालिका म्वाग्रीया इकी यज्ञया मि तर्पया मि नम॥ ॥ खुंरुंरुं खुंरुंरुं खुंरुंरुं महा

पृथ्वीपदीयादिकं विधाय। मूलनसुखविंशतिवारं श्रायाणमृत्तनं विंशमल्लसंतर्था मूलादिकं पदार्थं॥ मूलनय
व्यो रत्नं दत्त्वा। तदा इयात्ताटिकात्मनर्गतं विंशमल्लसंतर्था सा काली विंशमल्लसंतर्था मूलादिकं
विधाय। तस्यांगद्वयं विधाय॥ तद्यथा॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** महामैत्रकालिका श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ दक्षिण
कले॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** श्रीवत्सकालिका श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ वामकले॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** कमकाली
श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ दक्षिण॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** कालकाली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥
॥ वामन॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** गगनकाली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ दक्षिण॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** हासाकाली
श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ वामन॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** नयकाली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ उच्चैः

॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** वलुकूटग्वरी काली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ उच्चैः तर्पको॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** जामन
काली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ उच्चैः तर्पको॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** रुक्माविही काली श्रायाइकी पूजयामि
तर्पयामि नमः॥ उच्चैः॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** सैराविही काली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ विष्क॥ **ॐ ज्ञो**
हूं हूं हूं धर्मग्वरी काली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ दक्षिण॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** वैकिही कालि
याइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ दक्षिण॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** डाविही कालि श्रायाइकी पूजयामि तर्पया
मि नमः॥ दक्षिण॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** लीलावती कालि श्रायाइकी पूजयामि तर्पया तर्पयामि नमः॥ दक्षि
कना॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** उन्मल काली श्रायाइकी पूजयामि तर्पयामि नमः॥ वाम॥ **ॐ ज्ञो हूं हूं हूं** कूट

का कालि श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ वामकूर्यन॥ **ॐ जौं हूं कौं** हूं कान काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ मति वंधा॥ **ॐ जौं हूं कौं** तार्ज काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ वामकनाग्र॥ **ॐ जौं हूं कौं** रूनु काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ नांही॥ **ॐ जौं हूं कौं** नादिनी काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ दक्ष रागा॥ **ॐ जौं हूं कौं** मायिनी काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ कछी॥ **ॐ जौं हूं कौं** स्वामिनी काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ दऊा नो॥ **ॐ जौं हूं कौं** हासिनी कालि श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ दऊा नानि॥ **ॐ जौं हूं कौं** यम काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ दऊा नो धायी॥ **ॐ जौं हूं कौं** हूं सु काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ दऊा दतल॥ **ॐ जौं हूं कौं**

कालुग्रसन काली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ वामा नो॥ **ॐ जौं हूं कौं** कालुनाडिका ली श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ वामा नानि॥ **ॐ जौं हूं कौं** वहुयाग ग्वनी कालि श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ वामा नो धायी॥ **ॐ जौं हूं कौं** नाऊ हूं सु कालि श्रीया इकी पूरुया मित्रव्यामिनमः॥ वामा दतल॥ **ॐ जौं हूं कौं** वन मूलन यथाग किमि वसि संत र्या॥ वन धूय दीपने थया दिक् दत्ता नमस्कृत्या॥ यथाग कि दक्षिण वक्रा रुन धा दिक् दत्ता वक्रा ना दिक् दत्ता सीता था॥ तस्ये किं विद्म ऊर्न दत्ता॥ तामि द्वाद वता नूयन सम ऊर्न यन॥ मूर्त या वडा रुमा ऊर्न ह्वा॥ तदगंग दक्षि मधु घृत वीन उद्या दिशि ईत्वा नमस्कृत्या॥ क्रमा वी वि सु धा॥ तयं ह मा र्जना नि वि क्षय॥ द्वाद ग मिथूनं राऊर्न कान यित्वा॥ स्वयं उक्ता यथा सुख विह्व दिति क्रमा नी यागः॥

ॐ जौं जौं जौं कृष्णवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 ॐ जौं जौं जौं नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 ॐ जौं जौं जौं कृष्णवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 इति विन्यस्य श्रयः ॥ या इकाया मथ वक्ष्ये नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥
 यिही ॥ सर्वव्याप्ता मानसाय वा ने संदृष्ट ॥ मूलं दगधज ह्यप्रम ॥ या इकाय नमः सर्वसिद्धिप्र
 दायिनी ॥ य नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥

हे नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 या कय विन्याग ॥ इति वक्ष्ये नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 इति वक्ष्ये नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 यिही ॥ सर्वव्याप्ता मानसाय वा ने संदृष्ट ॥ मूलं दगधज ह्यप्रम ॥ या इकाय नमः सर्वसिद्धिप्र
 दायिनी ॥ य नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षया ॥
 तदवताम आदिन्यासः ॥ अथ वक्ष्ये नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥
 विकटकालिकाये नमः ॥ इति नक्षत्रवर्मविहितसुखरूपाये श्रीमहाकालिकामकलाया इकाये नमः ॥ स्वाहा ॥

लिकाये ननामिका स्थानम॥ **हुं अं हूं** त्र द्वा द्वा सकालिकाये कनिका स्थानम॥ **हुं अं हूं** सुः
मिनामालिनिका लिकाये कनतल कनय का स्थानम॥ **य उं** ग श्वरी नमः सा हा वषट् कूं रु
॥ इति ॥ अ नै ॥ मूल जय ॥ सा उं ॥ त्वं वक्राद्यादि ॥ नमस्कृत्य प्रणमत् ॥ ॥ अथ निर्वीली ॥ अस्य
निर्वीणवक्रमं जस्य यवैव क्रमविश्रुत गती ॥ ६ ॥ यवैव क्रमवता ॥ हुं वी रूं ॥ सः ग किः ॥ ग वी की ल कूं ॥
मम वक्रत्वा कय विनियोग ॥ इति वक्षीरुति ॥ अ नै ॥ निनातुं वै निनाकारं निर्विकल्पं निनै
रुनै ॥ आतिर्मय यवैव क्रम सुनै इत्यसि साधक ॥ इति ॥ मूलै द ग अ रु हा ॥ रु वै सु म य ॥ वक्षीरु
तिः ॥ अ इ त म अ न हि रं आतिर्मय मना कलै ॥ सर्वथा विनिनाकारं यवैव क्रममासुत ॥ ॥

अथ निर्वीणवाक्यं ॥ अत आतिर्वहि आति व्यापक आति नववा ॥ अत त्व न हि रं आति सर्व आति न हं सु दा ॥ वक्र स्वा
हा यवैव क्रम स्वाहा ॥ सर्व वक्र स्वाहा ॥ इति याग ॥ क लै ॥ ॥ अस्य दै ग अ व न मं ज स्य व सै ग अ वि श्रु त न र कृ
कूं ६ ॥ अ म हा व स न ग्य नी द व ता ॥ हुं वी रूं ॥ ६ ॥ ग कि ॥ ग वी की ल कूं ॥ म म न नी न रु द्वा र्थे वि निया ग ॥ अ नै
॥ अ म लै म ध ना पृ ष्ठी दू नी पृ ष्ठा य र्थे तथा ॥ न ति प्री ति स मा य कूं आ त्वा दै ता न्नि ण्ण ध य ॥ **हुं अं हूं** व सै ग
न्य ना य कूं रु द्वा हा ॥ इति द ग अ रु हा ॥ हुं व सै ग न्य ना य रु द्वा हा ॥ सर्व दार् ण म य र इ त्वं रु वी ह न र कूं रु द्वा
हा ॥ इति का अ हि म रु वी ॥ हुं व स न ग्य ना य कूं रु द्वा हा ॥ इति सै ण्ण आ हुं हुं वं रु द्वा हा ॥ इति का क
म र्द नै ॥ **हुं हूं** म ला य क र्षि ति म ला य क र्षि रं क न र रु दि द हि र स्वा हा ॥ इति द ग अ रु हा ॥ इति द ग अ रु हा ॥ इति द ग अ रु हा ॥ इति द ग अ रु हा ॥ ॥

ॐ तिदेतक्षवनी॥ अथ गिरिवधनी॥ ॥ **ॐ ह्रीं कौं** गोविष्णुं कृष्णं ब्रह्म गङ्गा सर्वविद्या नृचूदया चूदय सर्वनाम
नृजीकृत्तूरं कुरु नमः स्वाहा॥ ॐ ति गिरिवधनी॥ ॥ अथ स्नानं॥ गाय कृतवर्जं त्रिकातवर्तुवडनमं त्रिकातवर्तु
वर्तु॥ **ॐ** सिद्धिकामकलं स्वाहा॥ वडनमं॥ **वं सं**॥ विलिख्य॥ वामहस्तं नाभ्याहिरिमंश॥ **ॐ** सर्वदा वयं नमः
सिमलाय कर्षति सर्वतीर्थं लिख्य कुरु कुरु नमः स्वाहा॥ **ॐ ह्रीं** स्वाहा॥ ॐ तिया निमूडया हि विंश्या॥
ॐ ह्रीं यनमचुर्न तर्पयामि स्वाहा॥ **ॐ ह्रीं** यनाय नचुर्न तर्पयामि स्वाहा॥ **ॐ ह्रीं** यनमच्छिचुर्न तर्पयामि स्वाहा
॥ **ॐ ह्रीं** महाकामकलं तर्पयामि नमः स्वाहा॥ **ॐ ह्रीं** नवतर्पयामि स्वाहा॥ **ॐ ह्रीं** नवीनतर्पयामि नमः स्वा
हा॥ **ॐ ह्रीं** नूतनयानि मूडया जिन लिख्य कलान्ति स्नानविधिः॥ ॥ अथ विरुति स्नानं॥ **ॐ ह्रीं** स्वाहा॥

ॐ ति विरुति स्नानमंश॥ **ॐ ह्रीं** सदानि वायमहायागयनय विरुति यनय **ॐ ह्रीं** स्वाहा॥ ॐ त्रिहिरिमंश॥ **ॐ ह्रीं**
महाका विरुतय स्वाहा॥ ब्रह्म नृध॥ **ॐ ह्रीं** महाकामकला गकय स्वाहा॥ तलाट॥ **ॐ ह्रीं** ज्ञानगकय स्वाहा॥ की
०॥ **ॐ ह्रीं** निवगकय स्वाहा॥ रुदि॥ **ॐ ह्रीं** ब्रह्मगकय स्वाहा॥ वामोऽंग॥ **ॐ ह्रीं** विष्णुगकय स्वाहा॥ दक्षीण
॥ **ॐ ह्रीं** नूडगकय स्वाहा॥ नाहो॥ **ॐ ह्रीं** सदानि वगकय स्वाहा॥ यक॥ **ॐ ह्रीं** महा निवगकय स्वाहा॥ ॐ ति
उद्धृतन विधिः॥ **ॐ ह्रीं** वरुक्षय स्वाहा॥ कृतदानी॥ **ॐ ह्रीं** स्वाहा॥ ॐ त्रिहिरिमंश॥ **ॐ ह्रीं** त्रिकातवर्तुवडनमं
लिख्य॥ त्रिकातमं **ॐ ह्रीं** विंशमार्ता वडनमं॥ वंसं विलिख्य॥ **ॐ ह्रीं** सदानि विरुति यनय सर्वतार्थ लिख्य
कुरु स्वाहा॥ ॐ त्रिहिरिमंश॥ **ॐ ह्रीं** स्नानमहाकामकला ब्रह्मकालिका ये स्वाहा॥ ब्रह्म नृध॥ **ॐ ह्रीं** स्वाहा॥ ब्रह्म

न किकाति काये स्वाहा ॥ त ता ट ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ स्वन न किकातिक ॥ के ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ अति न किकाति का
 ये स्वाहा ॥ रुदि ॥ **स्वाहा** विष्णु न किकाति काये स्वाहा ॥ वामी ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ गिव न किकाति काये स्वाहा ॥ द र्जी ॥
 ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ नूड न किकाति काये स्वाहा ॥ नारी ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ स र गिव न किकाति काये स्वाहा ॥ पृष्ठा ॥ **ॐ सं**
ॐ स्वाहा ॥ महा गिव न किकाति काये स्वाहा ॥ क रुदि ॥ **ॐ सो ४ मो ४** सु दानि वाय विरुति पतय स्वाहा ॥ सर्व न कि
 काति काये वाय काय स्वाहा ॥ निरादि पादार्न वाय के ॥ **ॐ** महा काम कला न कय न चेत न्य न्य पिदि ॥ विरुति स्वा
 न सी गत्वं द ह रु दि ॥ य य रु म ॥ नूति विरुति धन व विधि ॥ ॥ अथ स व द न विधि ॥ उ व रु त् त्रिका म व
 रु व उ न र्म ॥ त्रिका म व **वै** ॥ व रु ना द विं ड क ला ॥ व उ न र्म **वै** ॥ ति र्वा **ॐ सं** महा म ता य क वि वि ता

य रु दि क र २ **रुं** रु ५ स्वाहा ॥ नूति रि मं ग ॥ किं वि रु त् मा दा य ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ वा स ना रु द य रु दि नी त्वा **ॐ सं** स्वा
 हा ॥ नूति स र्व वा यं द रु ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ नूति द रु ना ग य ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥ नूति रु भो नि कि य ॥ **ॐ सं** स्वाहा ॥
 स्वाय रु द म र्ध नि व द या मि य ती रु ४ स्वाहा ॥ नूति स र्वा र्ध द त्वा ॥ मू त द व ता अ य दि य उ र्गी न्य स्य ॥ स र्वा
 र्ध न ॥ **ॐ सं** उ य दा दि त्म र्म उ त् व र्ध न्ये गिव वे त न्या ये गिव महा काम कला काति काये नि व द या मि य ती
 रु ४ स्वाहा ॥ नूति रि व र्ध द न ॥ य थ ग कि म र्त्तं ज ह्वा ॥ अ थ ग य जी ॥ अ स्या ४ काम कला ग य जी वि द्या या ४
 व रु रु व वा अ वि धा नू नू रु र्कं द रु ग्री महा काम कला काति काय द व ना ॥ **ॐ** वी डी ॥ **स ४** ग कि ४ ॥ ग र्ध की त् क ॥
 म म व रु त्वा य क य वि नि या ग ॥ नूति र्वा न ॥ य रु जी म न वा जि त्वा न व रु की त्वा व नी ॥ मू रु ख र्वा ग या ग ति मा

[illegible][illegible]

जात्या॥ **ॐ** शुद्धिकालिकाये स्वाहा॥ त्रासने॥ **ॐ** **सुं** महाकामकलाकालिकसर्वगानर्त्री कन **ॐ** स्वाहा॥ कृति
कयानजा॥ **ॐ** महाकामकलसिद्धिकालिकवक्त्ररूपिणि॥ नित्यकृत्यं कनिष्ठासिद्धिदहि नमा मुन॥ अथवा
जक्षनदी॥ **ॐ** नमः स्वाहा॥ वनदी॥ **ॐ** गंगवयमनवेवगमदावनिसनसुति॥ नर्मदसिद्धकायनिजलस्मिन्स
निधिं कन॥ इति तीर्थवाहनी॥ **ॐ** नमः नमः स्वाहा॥ गंधर्व्याजतदानी॥ **ॐ** इति दगधजयथा॥ **ॐ** स्वा
हा॥ इति तज्जलनवउर्ध्वयाजदी॥ अथ गणपयजा॥ अस्य महागवयति मंत्रस्य गणकअविषाउषि
कुंठे दश॥ महागवयतिर्दवता॥ **ॐ** वीडी॥ **सुं** गकिषा॥ गखैकीतकी॥ सर्वविघ्ननिवानेविनियोगा॥ इ
ति वहीजलिषा॥ **ॐ** त्रै **ॐ** त्रै **ॐ** म **ॐ** त्रै **ॐ** क **सुं** कन॥ अर्वकदयादिन्यास॥ ध्यानं॥ दंतयागं कगधर्व

नद्विजितावनै॥ स्तुतलैवादनग्यामै द्वीपित्वकनागरुषदी॥ इति ध्यात्वा॥ **ॐ** **ॐ** **सुं** स्वाहा॥ महागवय
तयसुगकिकायनमः॥ इति दृजा मंत्र॥ मूलं दगधज स्वा॥ **ॐ** **ॐ** महागवयतयवि सर्वविघ्ननिवान
न॥ महाकामकला दृजां स्तुतलै कननमः॥ अर्वमुत्वा॥ अस्य वदक मंत्रस्य विकटहेनवाअविषा
तद्वृद्धे दश॥ श्री महावदकादवता॥ **ॐ** वीडी॥ **सुं** गकिषा॥ गखैकीतकी॥ मम सर्वगं त्यर्थविनियोगा
॥ **ॐ** त्रै **ॐ** त्रै **ॐ** म **ॐ** त्रै **ॐ** क **सुं** कन॥ **ॐ** क **ॐ** नि **ॐ** नि **ॐ** क **ॐ** न **सुं** त्रै **ॐ** ध्यानं॥ स्तुतलैवादनग्यामै दंतयव
नध्यानिदी॥ तिष्ठेत्तज्जलिलैगनै सर्वगान् कनं सुनर॥ **ॐ** **ॐ** **सुं** स्वाहा॥ महावदकायसुगकिकायन
मः॥ दृजा मंत्र॥ मूलं दगधजयथा॥ **ॐ** **ॐ** सर्वगकि कनगन महावदक सात्विका महाकामकली यज्जग

स्तानयविलाभयार्थं **ॐ हं** रत्नमष्टा॥ वक्षीर्गतिः॥ **ॐ संखं** सर्वविद्यानृत्सानय २ **ॐ हं** नमः स्वाहा॥
 तियादद्यात्तयतात्तयच्छाटिकयावत्ता॥ **ॐ व** क्लृप्तनमः स्वाहा॥ **ॐ** विष्णुवनमः स्वाहा॥ **ॐ** नृज
 यनमः स्वाहा॥ **ॐ** वासुदेवगायनमः स्वाहा॥ इति वामरागयज्ञयत्॥ **ॐ संखं** ओं स्वाहा॥ मूख॥ **ॐ संखं**
 रुद्रस्वाहा॥ इति॥ **ॐ संखं** त्रों हं रुद्रस्वाहा॥ इति गिनादियादार्ककायभधने॥ **ॐ संखं** उं डीकः स्वाहा
 ॥ इति रुमिभधने॥ **ॐ संखं** सर्वविद्यानृत्सानय २ **ॐ हं** रुद्रस्वाहा॥ इत्युक्तयज्ञयने॥ विष्णुनिवासी॥
ॐ संखं दन्मदयुजामि स्वाहा॥ इति रुम्यहिमे उदी॥ **ॐ संखं** मों स्वाहा॥ **ॐ संखं** दों स्वाहा॥ **ॐ संखं**
 स्वाहा॥ इति विष्णुयज्ञमै उयवीरुदी॥ ॥ अस्यासनमै उय महाप्रतहे नवाभयिः ॥ अन्तर्दृष्टं ६४

महाप्रतसदानिवाद्यवता॥ **सौ** वीर्यं स्वाहा गकिः ॥ गव्यं कीर्तकी॥ मम असन सिद्धय विनियोगः ॥ इ
 तिवक्षीर्गतिः॥ **सौ** त्रै॥ **सौ** त॥ **सूं** मा॥ **सूं** त्र॥ **सूं** का॥ **सूं** कः कर्त्त॥ **सूं** जि॥ **सूं** जि॥ **सूं** कवा॥ **सूं** ना॥ **सूं** नृमं
 ॥ अर्चने॥ उल्लने अमवर्त्तु ववना रुयकनी वरी॥ महाप्रतै गिर्वै अयत्तु अविष्णुगिवात्मकी॥ उ
 वं अत्वा॥ **ॐ संखं** **सौ** सदानिवाय महाप्रतासनाय गंधर्व्या कर्त्तनमः स्वाहा॥ **सौ** सदानिव महा
 प्रतासनाय **सौ** नमः॥ जय ४१०॥ **ॐ** सदानिव महाप्रतसर्वसिद्धिप्रदायक॥ महाकामकलीय
 च सिद्धिदहिनमासुत॥ **ॐ संखं** **सूं** **सूं** **सूं** **सूं** स्वाहा॥ उयविष्णु॥ **ॐ सं** स्वाहा॥ **ॐ सं** स्वाहा॥ **ॐ सं** स्वाहा॥
 इति जिनावम्य॥ **ॐ सं** मूखमार्जनै॥ **ॐ हं** सः स्वाहा॥ कवज्ञातनै॥ **ॐ** प्रकटकालिकाये नमः॥ मूख॥

ॐ कनालिकाये स्वाहा ॥ वामनासाय ॥ ॐ चक्षुः कालिकाये स्वाहा ॥ दक्षनाग्या ॥ ॐ टंक कालिकाये स्वाहा ॥ वामनासाय ॥
ॐ तैलाक कालिकाये स्वाहा ॥ दक्षनाग्या ॥ ॐ यागिनी कालिकाये स्वाहा ॥ वामनासाय ॥ ॐ गुरु कालिकाये स्वाहा ॥ दक्षनाग्या ॥
ॐ अनादिका कालिकाये स्वाहा ॥ नाहो ॥ ॐ धान कालिकाये स्वाहा ॥ रुदि ॥ ॐ यव कालिकाये स्वाहा ॥ निवसि ॥ ॐ जकि
नी कालिकाये स्वाहा ॥ वामीना ॥ ॐ कालिकाये नमः स्वाहा ॥ दक्षनाग्या ॥ ॐ मंथं कामकला कालिकाये विष्णु ॥ ॐ
कालिकाये धीमहि ॥ तन्त्र ८ ग किं १५ वा दया ॥ ॐ स्वाहा ॥ पूजा वसुधा ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ पूजा सामग्री साध
नी ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ गन्धदि (गन्धनी) ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ नेवद्यादि (गन्धनी) ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥
॥ यंत्र निर्माणी ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ नृतिरिप्यां रुलि ॥ ॐ (मंथं) यनमयुनवनमः स्वाहा ॥ ॐ (मंथं) यनमयुनवनमः
यनमः स्वाहा ॥ ॐ (मंथं) यनमयुनवनमः स्वाहा ॥ ॐ (मंथं) यनमयुनवनमः स्वाहा ॥ ॐ (मंथं) यनमयुनवनमः स्वाहा ॥

ॐ वीर्ययुनवनमः स्वाहा ॥ नृति निवसि पूजयत् ॥ ॐ मंथं महा कामकला कालिकाये नमः स्वाहा ॥ नृतिरिप्यां रुलि
यत् ॥ ॐ (मंथं) महा गलयतयनमः स्वाहा ॥ मूलाधन विष्णु ॥ नृतिरिप्यां रुलि ॥ ॐ (मंथं) यनमयुनवनमः स्वाहा ॥ वाम
॥ ॐ (मंथं) महा गलयतयनमः स्वाहा ॥ दक्ष ॥ ॐ मंथं (मंथः) महा कामकला कालिकाये नमः स्वाहा ॥ मन्त्र ॥ ॐ नंथं (मंथः) स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ ॐ ॥ याकान विष्णु ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ नृति मीनादर्ग यन् दाह
रुस्मयात्सा नक्षमृत् वृद्धि विर्वित्य ॥ ॐ मंथं (मंथः) स्वाहा ॥ नृति दवता नृयैनात्मानं मन्त्र ॥ ॐ नृत्त्यैव
रिर्नृत्ते ८ वलवत्यति नं वपुः साधिनं रुत दं रुयात् सर्वपाप कृत्वा रुवत् ॥ नृतिरिप्यां रुलि ॥ नृत्त्यैव
मी ॥ नृत्त्यैव कृत्वा विष्णु गायत्री ८ दक्ष ॥ नृत्त्यैव कृत्वा विष्णु गायत्री ८ दक्ष ॥ नृत्त्यैव कृत्वा विष्णु गायत्री ८ दक्ष ॥ नृत्त्यैव कृत्वा विष्णु गायत्री ८ दक्ष ॥

जयविनियोगः॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥
 न॥ सूर्यकाटिपरीकाशं वैडकाटिसुगीतली॥ मृत्तलनैठुगदनी वातमालिं ग्यसंछिती॥ साईजिवतसुयाकानी
 क्रियाकर्मप्रवर्तिनी॥ सिद्धात्यलिकनी साज्ञान्यनवमसुखरयिणी॥ ज्ञाननगकिं ससुख्यवातयामेसमाव
 न॥ मानसेसुदृष्ट॥ मूलदगधज ह्याजयै समर्थ॥ मूलवाजगधजयै॥ धनकं ७४ व३४ व३४ व३४॥ कंरुकेर
 दालिग॥ नवकचकै॥ जिवा॥ ज्ञाननगकिं सुर्वगिसुर्वकर्मप्रवर्तिनिवातयामरुतंदहियायीमहनस
 र्वत॥ ॥ मातृकाभयादिषुठंगन्यासैकत्वा॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ जय॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥
 दिसुवीजमातृकास्त्रन्यास॥ ॥ नृथगकिं न्यास॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला
 नृस्यमातृकासुवस्त्रीमे॥ नृस्यवृत्ताभयि॥ नृगनीकंद॥ मातृकासुवस्त्रीमे॥ नृस्यवृत्ताभयि॥ नृगनीकंद॥ मातृ
 काभयादिषुठंगन्यासैकत्वा॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥

नकिं॥ सुर्वगकिं यदा कालिकादवता॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला
 र्थराज्ञावीजनकनीगन्यासैकत्वा॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ सुर्वगकिं यदा कालिकादवता॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला
 मृत्तमालाविरुषिती॥ दिगं वनी कनालासी मूलठंकधनीनिवी॥ निवगकिं धनीनग्रीकतव्यानयनायती॥ न
 र्वव्यात्वा॥ मानसेसुदृष्ट॥ मूलदगधज ह्याजयै समर्थ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला
 ॥ वामपाद॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला
 गकिं कालिकायेनम॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला
 दादहसकालिकायेनम॥ नृस्यकठरे नवमषि॥ नृनृदृष्टद॥ महाकामकला

निनार्न॥ **ॐ** सर्ववीजमयदवि सर्ववीजप्रवाधिनि। वीजन्यासरुर्तदहिसर्ववीर्जप्रयच्छम॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ**
वक्रकालधनहेनवमययनम॥ स्वाहा॥ निनसि॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** जगतीकुन्दसनम॥ स्वाहा॥ मूश्व॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ**
श्रीमहाकालीकामकलायनैवमस्तु नृपिणीदवतायेनम॥ स्वाहा॥ कदि॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** वीजायनम॥ स्वाहा॥ १
नाहो॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** स॥ गकयनम॥ स्वाहा॥ मूलाधन॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मूर्ध्वकीलकायनम॥ स्वाहा॥ यादया॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ**
ॐ **ॐ** **ॐ** **ॐ** मूतमै॥ ममयनैयातिनिस्तुवस्तुयाफयविनियोग॥ नम॥ स्वाहा॥ व्यायकैन्यास॥ अथक
नीगन्यास॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मू॥ प्रकटकालिकाये नैगुवास्थानम॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मू॥ विकटकालिकाये तर्जनीस्थानम
॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मू॥ उड्डिनीकालिकाये मध्यमास्थानम॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मू॥ ध्यानकालिकाये अनामिकास्थानम॥

ॐ **ॐ** **ॐ** **ॐ** मू॥ नृदादहासकालिकाये कनिष्ठिकास्थानम॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मू॥ निनामालिनीकालिकाये कनकत
पवास्थानम॥ ७॥ वृद्धदयादिन्यास॥ ७॥ तानववीजप्रकाति॥ ॥ अथयागन्यास॥ ॥ अथवीजयागन्या
सस्यकालाग्निभूतसनामिवयकटानन्दहेनवाजवि॥ ४॥ विनाइ॥ द॥ श्रीमहाकालीकामकर्तृनिनिसर्ववीजप्र
मूतप्रकृतिर्दवता॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** वीर्ज॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** गकि॥ मूर्ध्वकीलकाममगनीनात्यादनसर्ववीजात्यलोविनियोग॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ**
ता॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** म॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** का॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** क॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** द॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मि॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** मि॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** क॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** न॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ नृ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** **ॐ** सर्ववीजप्रदीपयत्तु
स्तुवकृतिकालिका॥ कनकतवदनीधर्मा॥ मू॥ ककंगानिवसजा॥ महामूर्ति॥ क॥ उताद्यानागर्तकानरुविती॥
कर्तृमूर्ति॥ धनी॥ वार्द्धमिवगकिधनामध॥ कलधनसमासीनीगजहृत्कामू॥ यानववर्मवनीधनी॥ द॥ दया

नमस्ते स्म नमः ॥ न वैश्वत्वा मानसा यवाने स्मिद्वय ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ मृतैर्दमक्षरं स्मृतं पिसमर्थ ॥ य(०५) ॥ खं व
क्षय नमस्तुता नमस्तुत कति नूदिती ॥ वीरुषा टी कनि ख्यामि वज्रद हं क न व म ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ जों
धं धी धं जयत श्री उदा काति काये नमः स्वाहा ॥ वामपाद ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ मों जों जों सिद्धि काति का
ये नमः स्वाहा ॥ दक्षपाद ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ कों जों मों वीरुषा काति काये नमः स्वाहा ॥ वामजाननि ॥
दं खं खं स्वाहा ॥ मों खों मों ग कि उदा काति काये नमः स्वाहा ॥ दक्षजाननि ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ मों जों
जों ल ल जिद्धा काति काये नमः स्वाहा ॥ वामकटो ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ हों मों खों काध काति काये नमः
स्वाहा ॥ दक्षकटो ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ जं मूं मूं मूं मृत्यु कति काति काये नमः स्वाहा ॥ वामरुद्र ॥ **दं खं**

दं खं खं स्वाहा ॥ मूं मूं मूं मूं यकट मूखी काति काये नमः स्वाहा ॥ दक्षरुद्र ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ मूं मूं
मूं विद्यु जिद्धा काति काये नमः स्वाहा ॥ वामकूर्यत्र ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ खूं मूं मूं मूं सर्व मरुत यं क
नी काति काये नमः स्वाहा ॥ दक्षकूर्यत्र ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ खूं खूं खूं ४ सर्व म माहिनी काति
काये नमः स्वाहा ॥ वामपाद ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ कों जों जों सर्व विद्या वनी काति काये नमः स्वाहा ॥
दक्षीण ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ **दं खं खं** सर्व सनमयी काति काये नमः स्वाहा ॥ कै(०) ॥ **दं खं खं** स्वाहा
॥ मों मों जों न दहा म मूखी काति काये नमः स्वाहा ॥ गल ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ जों जों मूं सर्व म वाधिनी कै
लिकाये नमः स्वाहा ॥ विद्वक ॥ **दं खं खं** स्वाहा ॥ मों जों जों सर्व श्रुति काति काये नमः स्वाहा ॥ मूखा ॥

सर्वसंहारिणी
ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ सर्वगंधर्वहकालिकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ वामग ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ यो यः
यः सो न्यस्त्यवहकालिकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षग ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सर्वप्रकाशिनी कालि
काये नमः ॥ स्वाहा ॥ वामन ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ ॐ कों जी स्वः सर्वविद्यातिनी कालिकाये नमः ॥ स्वाहा ॥
दक्षन ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ सर्वसंहारिणी कालिकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ वामक ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु
॥ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्वसंहारिणी कालिकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षक ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
तिगकिकालिकाये स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्वसंहारिणी कालिकाये स्वाहा ॥ त
लाट ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्वसंहारिणी कालिकाये नमः ॥ स्वाहा ॥ वामन



सुं सुं ४ सः स्वाहा ॥ सुकृष्ण पादिमा वयं २ अडं का तय र समा डं का तय र सर्व तत्वा मृत मत्या द नं क नूर स्वाहा ॥ द
 गक्ष मृत रु य ४ ॥ या य पा ज कि वि द नी य र गा ड वी पा ज य ४ ॥ अथ त र्व ती ॥ **ॐ** पु न म गु रै त र्व या मि
 न म ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ **ॐ** पु न ग कि न म ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ **ॐ** व र्द व क स्व रू पि ती ग्री म न्म हा का ती का म क ली त र्व या
 मि न म ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ **ॐ** त त्व म ड या त र्व ती ॥ ॥ अथ ग कि त र्व ती ॥ वा म हा ग ग कि मा नी य नि व सि ह र्द द त्वा हि मे ष्य त
 ॥ **ॐ** स ४ स ४ स ४ सर्व तत्वा य धि न्ये क ता मृत तत्वा का ति का ये न म ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ सः सः सः का ली का म क ता ग ४
 कि त र्व या मि न म ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ अथ त र्व ती ॥ **ॐ** हं स ४ सा हं स्वाहा ॥ अडं क ल ति स्वाहा ॥ समा डं क
 ल ति स्वाहा ॥ व क स्वाहा ॥ अहं व क स्वाहा ॥ **ॐ** हं स ४ सा हं सर्व तत्वा मृत मय मा त्मा नै त र्व या मि न मः स्वाहा ॥

तत्त्व मू ड या वि द्या ॥ ३ ॥ त ता म हा वा क्यं स्म न ॥ **ॐ** हं सः सा हं अ न र्था ति र्वा हि षा ति ४ या प क षा ति न व वा डि
 त त्व स हि र्ने षा ति ४ सर्व षा ति न हं स दा ॥ सा हं स्वाहा ॥ अहं स ४ स्वाहा ॥ व क स्वाहा ॥ ग कि म या हं स्वाहा ॥ स
 र्व मा या हं स्वाहा ॥ व क वा हं स्वाहा ॥ स ४ स्वाहा ॥ त्व ४ स्वाहा ॥ ड ४ स्वाहा ॥ ॥ अथ न र्थ ग ४ ॥ मृ ता भ व क
 उ ति नी ध्या नं ॥ सूर्य का दि प ती का मी र्द ड का टि सु गी त ली ॥ मृ ता दि व क र्द वी र्द या पि नी व क रू पि नी ॥
 नी वा र्द शु क त न्द गो स्र स रू पी वि वि त य ४ ॥ उ र्व षा त्वा ॥ **ॐ** हं यै र्द व न म गि व मा न य र **ॐ** सः स्वाहा ॥
 य ना मृत मत्या अ त द मृत या वि त स र्वी ग व क म या रू त्वा य थ ग कि मृ त रु य स म र्था अ य म्य स्व स्व नै न
 य ४ ॥ मी या य थ ॥ अहं सा व क म य ४ स्वाहा ॥ अथ न र्थ ग वि वि ४ ॥ ॥ अथ वा रु ना दि ॥ य क्य स क मा दा

इदमावमनीयं इदं स्नानं इदं मंत्रं इदं ध्यानं इदं मंत्रं इदं ध्यानं इदं मंत्रं इदं ध्यानं

[illegible]

गीया इकी दूज या मिहूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न कर्द या मिहूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न सु विस्मि ति सै ह
 न ग कि का लि का म क ला ग क य ४ दू जि ता ४ सै न र्पि ता ४ सै न दू हूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ व्या य की ड लि ठा ॥ अथ य
 व का ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी स ४ का ली का म क ला ग कि व व ग कि का लि का गी या इ की दू ज या मिहूँ दूँ नमः स्वाहा
 ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी स ४ न ती न र्द या मिहूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी स ४ का ली का म क ला ग कि वि वू ग कि का लि
 का गी या इ की दू ज या मिहूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी स ४ न ती न र्द या मिहूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी स ४ का
 ली का म क ला ग कि नू ड ग कि का लि का गी या इ की दू ज या मिहूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी स ४ न ती न र्द या
 मिहूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ **दुँ धुँ धुँ** न न जी ४ का ली का म क ला ग कि स द नि व ग कि का लि का गी या इ की दू ज या मिहूँ दूँ

निष्प्रवाकाली काम कला गक यः परितः ४ संतुष्टं रुद्र नमः स्वाहा ॥ व्यायकौ जति ४ ॥ अथदि का
ल वृत्ता ॥ वउवमत्रु खदिक्ख स्वत्तमखा दिवामावरुन ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ नग कि कालिका श्रीया इकी वृत्ता यामि हूं
रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ वक्रि ग कि कालिका श्रीया इकी
वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ य म ग कि कालिका श्रीया
इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ने मत्य ग कि कालिका
श्रीया इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ व न र ग कि कालिका
श्रीया इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ वा य ग कि कालिका

सो
लि का श्रीया इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ क व न ग कि कालिका
श्रीया इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ वी ग न ग कि कालिका श्रीया
इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ वे क ग कि कालिका श्रीया
इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ सं न र ग कि कालिका श्रीया इकी
वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ती तर्प यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ ना दि क्वा त ग की न्दा दि प्र म
खा काली काम कला दि ग क यः परितः ४ संतुष्टं रुद्र नमः स्वाहा ॥ व्यायकौ जति ४ ॥ अथदि का
ल वृत्ता ॥ वउवमत्रु खदिक्ख ॥ **ॐ संखं** **सो** ॥ व न र ग कि कालिका श्रीया इकी वृत्ता यामि हूं रुद्र नमः स्वाहा ॥ **ॐ संखं** **सो**

हुं मं खं मूं मूं स ४ ख ४ हुं उक्ति षवा छति न्ये वलुया गम्य नि कालिका ये हुं रुद्र नमः ४ स्वाहा ॥ हुं मं खं हुं स ४ सा हे स्वा
 हा ॥ हुं मं खं हुं स ४ स्वाहा ॥ गच्छेद या त् ॥ ने व य ग्र उदी ॥ हुं मं खं हुं स्वाहा ॥ वंदनी ॥ हुं मं खं हुं स्वाहा ॥ न
 कनी ॥ हुं मं खं हुं महा भय परु कालि गच्छेत् क र र स च्च ज न म व ग मा न य हुं रुद्र नमः ४ स्वाहा ॥ न जनी ॥ हुं मं खं न
 ल स्वाहा ॥ ति ह नै ॥ हुं मं खं गी ध र्व कालिक स्वाहा ॥ वृषी ॥ हुं मं खं हुं मूं हुं हुं ४ य न मा भू त काली यति गृह्णामि
 स्वाहा ॥ वजीरति ४ हुं मं खं काली काम कल द विय रै व क स नू यिति ॥ य न्म या वि हि नै किं वि त् त स र्व र्सी ग म मु म
 ॥ हुं रुद्र नमः ४ स्वाहा ॥ हुं मं खं न उ र्हे न वा य वि प्र ह का लाग्नि नू ज य धी म हि ॥ ग न्ना य ४ य वा द या त् ॥ या जनी ॥ हुं मं
 हुं हि नि र स्वाहा ॥ हुं मं खं स र्व ग कि कालिका ये स्वाहा ॥ वृजनी ॥ हुं मं खं काली काम कला ग कि कालिका ये न व क्क

ग व ति न्म ४ हुं मं खं हुं य स म र क ह र ख र स्वाहा ॥ हुं हुं स्वाहा ॥ ॥ न स्या ४ गी य रु ग म य जी वि द्या या व क्क र्हे न व
 म पि ४ न नू दृ द ४ गी म हा य ग्म म य जी द व ता हुं वी ज्ञी ॥ स्वाहा ग कि ४ ग र्वी की त की ॥ म म य ग्म स्रु त्वा न
 ल वि नि या ग ४ ॥ हुं नै ॥ हुं त ॥ हुं म ॥ हुं न ॥ हुं क ॥ ४ क न त ल ॥ हुं ह ॥ हुं गि न ॥ हुं गि त्वा ॥ हुं क व ॥ हुं न ॥
 रु ४ नृ मु ॥ नृ ति क नी ग न्या सो क त्या ॥ ध्व नै ॥ सै स म न य ग्म म य जी स र्व य रु द त्वा दी वा च र्व र्म ध नी ग्म
 मी मू उ मा ला वि रु पि ती गि व ग कि ध नी वा ध ४ स र्व्या लै को न रु पि ती ॥ रु टि ती धा न द क्क जी त ल जि क्क रु य
 न की ॥ न र्व क्क ला मा न सा य वा ने सी दृ द ॥ नृ लै द ग ध रु ह्वा रु यै स म र्था ॥ हुं मं खं हुं रुद्र स्वाहा ॥ या जनी ॥ हुं मं
 हुं हुं हुं स्वाहा ॥ वी ज्ञी ॥ हुं स्वाहा ॥ य ग्म म य जी रु लै द हि हुं रुद्र नमः ४ स्वाहा ॥ नृ लै र्म मू उ दी ॥ हुं हुं स ४ स्वाहा

नृ क मा ली य ग्म स्रु ति गृह्णै वी ज्ञ रु पि ती

॥ इति ॥ ऊँ बहू कालिकाये विमलैः विकटकालिकाये धीमहि । तन्ना कालीयवा दयात् ॥ इति गमयशादगम्य
 रिमेश्च ॥ वक्ष्यति ॥ कनालियरु गमयती सर्वयद्रुतुषद । दीक्षास्तु रक्षनयामि दीक्षास्तु ययुष्म ॥ गमय
 ती य ० नक्षानय ॥ इति दीक्षास्तु रक्षनय विधिः ॥ ॥ श्रीगुप्त्या नमः ॥ ॥ कामकला कालीयीयती नस्मिन् ॥
 ॥ कलसि हानन्दनाथ ॥ कलाप्रत्या नन्द ॥ कलुदीपानन्द ॥ कलुवतानन्द ॥ इति दिव्योद्यः ॥ ॥ हयग्रीवानन्द ॥ वक्षिजिह्वा
 नन्द ॥ ललिहानानन्द ॥ विसृतिगमनन्द ॥ विंगरुटानन्द ॥ अग्निकमनन्द ॥ विद्रुयाजानन्द ॥ इति सिद्धोद्यः ॥ ॥
 वित्तिप्रदानन्द ॥ वक्रप्रियानन्द ॥ सुनानन्द ॥ मीसानन्द ॥ ललनानन्द ॥ अष्टसासानन्द ॥ अष्टेतानन्द ॥ निर्विकानन्द ॥
 इति मानवोद्यः ॥ ॥ २३ महामग्नानन्दनाथगयाइकां यज्ञयामि ॥ ॥ अष्टहेनवानन्द ॥ कालाग्रिहेनव ॥ वटवानलहेन

॥ महामग्नयाग्रिहेनवानन्दनाथगयाइकां यज्ञयामि तर्पयामि नमः ॥ ॥ अथ कलुगच्छयनी ॥ ॥ अस्तु कलुगच्छ
 तवातिनि सुखदवि ॥ त्रिदशवननमित्तप्रतगजनवस्तु सकल सुनासुनमाहिनि विविधसिद्धिदायिनि मा
 तनातिकरयथास्तु नमो द्यासयाद्यास्य रुद्रजनमः स्वाहा ॥ नमो हेनविवा र्मुत्तनमः सर्वार्थसाधका श्रीन
 सागनसंस्तुत सुखदवि नमो भूमा इति कलुगच्छयनविधिः ॥ ॥ ० ॥ ऊँ बहू कलुहं कानवृद्धिमनः ॥ अथ कलु
 वक्ष्यति ॥ कलाप्रत्या नन्दनाथगयाइकां यज्ञयामि तर्पयामि नमः ॥ ॥ अस्तु कलुगच्छ
 तवातिनि सुखदवि ॥ त्रिदशवननमित्तप्रतगजनवस्तु सकल सुनासुनमाहिनि विविधसिद्धिदायिनि मा
 तनातिकरयथास्तु नमो द्यासयाद्यास्य रुद्रजनमः स्वाहा ॥ नमो हेनविवा र्मुत्तनमः सर्वार्थसाधका श्रीन
 सागनसंस्तुत सुखदवि नमो भूमा इति कलुगच्छयनविधिः ॥ ॥ ० ॥ ऊँ बहू कलुहं कानवृद्धिमनः ॥ अथ कलु
 वक्ष्यति ॥ कलाप्रत्या नन्दनाथगयाइकां यज्ञयामि तर्पयामि नमः ॥ ॥ अस्तु कलुगच्छ
 तवातिनि सुखदवि ॥ त्रिदशवननमित्तप्रतगजनवस्तु सकल सुनासुनमाहिनि विविधसिद्धिदायिनि मा
 तनातिकरयथास्तु नमो द्यासयाद्यास्य रुद्रजनमः स्वाहा ॥ नमो हेनविवा र्मुत्तनमः सर्वार्थसाधका श्रीन
 सागनसंस्तुत सुखदवि नमो भूमा इति कलुगच्छयनविधिः ॥ ॥ ० ॥ ऊँ बहू कलुहं कानवृद्धिमनः ॥ अथ कलु

[illegible][illegible]

लमायाययीवृदसंकाशमहामानीतिविश्रुता॥नीलीहानूहकानिकानवदनीनीलीरुनाडियहंदा
 ईलेननिर्गखवातधनूवसंहावकोलाननी॥घष्ठाघर्धनद्याननादमसुकृद्वालायनीताननीयेनीवेन
 गकूँतलेसुविमलेतंकासकासेकुवै॥॥वर्मखकृतिश्रुतंवयागमंकगमवव।कासदह्यववायववाले
 नखकुशारुवत्॥॥काजीनोडीसुगुधघनइवितहनावेधुवीकासवकुमाहडीवर्धिकाइयाविविधगुण
 तावकस्त्रावतस्त्री॥रुनल्लविघ्ननाल्लवितियतिवइकायागिनीकृतालाउकासानेकरूयाविवि
 धगुणयतापातुमीदन्ववक॥२॥सुखेस्मितीकयकनीनविवेडविंवेधत्वास्त्रेणववनयागिस्त्रगमुन
 छी।वदायगमदिगपतीयनवीचनेवातुगस्मिताकयतिसदिकनीमइगी॥॥स्त्रियाधदादिम

दधतिकवपूदेवक्रकैकासवीर्णांनपासुर्वायुधनोमनसिखवनदाइधसर्धर्हिनागी।नवाहीधयदानाघन
 कनकददाविश्वनशाकतास्त्रीसुयस्त्रियायसिद्धाकयतिपनमूदाविधनूयाविधाता॥॥विं६॥नुतालेदधतिकन
 पूठासंहनासेकविश्वंसानंदयागयुकाविदधतियनमाहावरूताविभाषा॥निर्ददानादनूयान्दधतिघनरवा
 द्यानयवधहस्त्रागमदवीकयतीकगदखिततनाहावनिर्हववदी॥कालागिस्त्रियतीवनेडयनमाविष्मलिका
 सुर्धमसैसानाहुवमुइतकगलावृत्तरुवात्मना॥यादवीवनरावयावकेयतामन्यनगसाधुतासौराग्यंमुखदा
 विष्मलिहवत्तसानाखगकिर्यक॥ताजीवेनमाश्वमकनहयकपिअकलमायसिंहानवास्याहिधेयादधतिकनय
 ताननमासायिनृत्या॥ननाइधवयहलीविविधरुयहनाद्यानयायैयधुसाहासादवीयसिद्धाकयतिऊयकनीगम

यसोम्याय वै जी ॥ विष्णुग्रीलय काविहीरुगवती व भ्रादि वा माऊना कित्यादि कृत तत्त्वं गीरुवकृत श्रीरि न वा घा ४ यना
 हतास्त्र वन रंग मादि रंग गती लीने कथ्यना कनी ख्याता ग्रीयन मा य नाय न गिवा श्री मसुया या ठमी ॥ ७ ॥ हा ग्री रंग द क
 धम नरु रिर्हा वा विहा वा न्विता हा ल्यस्ये व विरुति हा ग य न मा द रुया रु क का विष्णुत्मा सु क से व विष्णु न नी न काऊ
 ता या विनी सयं ग्रीय न रा ग हा व य न मा ग कि र्ज यं ली य नी ॥ ८ ॥ हति र्हु नि विरुति व न दा य न मा र्थ य का क त्या रा का न
 त क नी रंग द क धाता ॥ न का क ता ह न हा हा व वि गेय मा ता हा ग म ल या र य ति सिद्ध य हा वि ग म ती ॥ ९ ॥ त्री न ल या क न
 त की लि दि ग म ल ल श्री ३ का न ल्य स्र व वि वि धा क न ले क धा जी ॥ की जा क ता न रु सि वै दि त वि ग म ल क म्भी हा गी न का न हा
 गि वा य न मा ऊ यं नी ॥ १० ॥ ली ला खि ला रंग त सं ह न ले क या जी कित्यादि तत्त्वं व न रु त ल यं क त हा ॥ हा ता ल यं व स ह से ग

गि व क हा वा या म स्र या न क र य य ति न क मा ऊ ॥ ल ज्ञा ल र वि धा न रा ग य न मा ली ना खि ल द र्मि नी नित्या नित्य नि र्ग
 रा ग य न मा हा वा लि ता हा व र्गी ॥ ना ना रा ग त या न स्र व न हि ता ली ना रंग त्या वि ग ४ स यं ग्री त य रा ग का न न गि वा
 ग कि र्ज य ल्य रु मा ॥ हा वा हा व वि रु व हा व न हि ता ली ग क र्ज य ता धृ ता म् का क ग यं व का न हा गि व ४ यं व क या ला धृ ता ॥
 संहि ल्या न रु मं ठ ला स न रु ता या ग म न्वि ता या ग म सि द्धा सें ग स या ग या ग वि म ल र्ज य ता य ना या ठमी ॥ ११ ॥ हा वा नि रु
 न हा व ग न्य म हि मा न जा ऊ र्ज य ता वि हा सि द्धा से व य ना न मा हा ग व ती नो ज य ना वी वि क ॥ धा ना चा न न्र धा न धा न म
 ति मा न सा नं द ल श्री य ना व्या य धा य क हा व वा ध कृत गी नित्या नि र्ग म रु व ॥ १२ ॥ न यी त न का न व रु क कृ ष्ण न
 वा ड नि र्ज य ल ने व रु ति ॥ न व रु न मं ठा वि व र्ज य ना नि र्ज य ता नि र्ज य ता य न गी ॥ १३ ॥ या ता ला दि गि वा न वि ष्णु

जननी इष्टवर्ज्यं स कानित्याख्याति कनिष्ठिका नृकलं मूल्ययुक्ता नमिका ॥ याम मीठ लहाव नाऊ निनिवाह
 यधे कलीनी पना नाना स्यात्तत्संदनी रुगवती या यो घविधं सका ॥ २॥ खवकवर्हिता सा न नृह नित विरहाग
 मृकिषदाता ॥ उक्ता धाहं सवगी मनिनिक ननिश निर्जिता ॥ गवविधं ॥ नाना मार्ग वसिं ॥ एतस्य कनहना विरुह
 वनवाधा सूर्य यागीय लला विविध ऊय कना या तु मीं हाव गकि ॥ ३॥ मूर्त्या मूर्ति न ॥ गवहाव यनमाना नाखिता
 दर्शन नाना मायस संवेता यन मिवा गच्छे कनय म्वरी ॥ सै ग याति मिवे कवि म्व विमला विन्मा उ नूया विदुः स ये जी
 द गदि कनी विजय गीं म त्यु तीत्या यना ॥ २॥ इति हृद्यादिका ली सकद गुरु द का ली सुति र्ज्ञाना लुव ॥ ७ ॥
 ॐ नमः ॥ जलं वाद नाय ॥ ॐ नमो नृ लव पा नै य र्थ्या उ नू या दा मूर्ति या व लु ले मि ॥ नृ प्रथम ता या त कृत्या नै त नै यू जा ध

मैतवः ॥ ज्ञानमागत्या ॥ तना सामान्य पाठम कं स्त्र ययित्वा ॥ दान पूजा मानरुत् ॥ यत्थ कय का वल ती पूजयत् ॥ तत्समा
 य दहलीय वग्ध ॥ तग स नै पूजयित्वा ॥ उय विभग ॥ यथा ॥ ॐ हूं ॥ समस्त का ल कला सना यन मः ॥ ॐ हूं ॥ इति मे
 उत आ स नै पूजयित्वा ॥ उय विभग ॥ इति आ स न पूजा विधिः ॥ ॐ हूं ॥ गु र ग ल ल क द व ता न म स्तु त्वा ॥ पूजन मानरुत् ॥ ॥
 तग दो वहु मा र का न्या सः ॥ तद नै त नै मूल मै उत उि ॥ ध्या त यामै का न यत् ॥ तत्समा य ॥ ग कि स्त्र न का ला गि नू डं ध्या यत् ॥
 तना मूल न्या सः ॥ यथा ॥ ॐ हूं ॥ कनिष्ठा र्थ नमः ॥ सिद्धि क ना ली नृ नामि का र्थ नमः ॥ ॐ हूं ॥ म ध मा र्थ नमः ॥ ॐ हूं ॥ त
 नी र्थ नमः ॥ नमः ॥ त्रै लु का र्थ नमः ॥ स्वा हा क न ग ल क न य का र्थ नमः ॥ इति क र्त्तव्या सः ॥ ॐ हूं ॥ द द या य नमः ॥ सिद्धि
 क ना ली गि न स स्त्रा हा ॥ ॐ हूं ॥ मि त्वा ये व व द ॥ ॐ हूं ॥ क व वा य हूं ॥ न मा न ऊ य ये वो व द ॥ स्वा हा नृ मा य द ॥ इत्यं ग य

सह॥ ॥ अथार्चयान् स्वयनं॥ **ॐ** ह्रूं गुह्यकालिकायास्तनायनम॥ महाधूपयुगुतनाधूया॥ नमो नमो ^{नमः} याज्ञस्वययामि॥
याज्ञस्वययत्॥ **ॐ** ह्रूं ननयाज्ञनयामिनम॥ **ॐ** ह्रूं समर्थ॥ मूलनालातनं॥ मूलनत्रिजलि॥ **ॐ** ह्रूं इत्यादिवर्तनं
जयत्॥ **सूं** ह्रूं नमः॥ इति मन्त्रः॥ **ॐ** ह्रूं इति वातमक्षजयत्॥ ॥ यानि मूर्ती यदर्थं॥ **ॐ** नसमातिथ्य॥ अस्मदज्ञा॥ **ॐ** ह्रूं
ह्रीं वूं॥ मीर्षानि क्रिया॥ **ॐ** ह्रूं वंदनं नमः॥ **ॐ** ह्रूं सिद्धनं नमः॥ **ॐ** ह्रूं नृजतं नमः॥ **ॐ** ह्रूं पूर्य नमः॥ ततानि नारी वन्वा मह
हसनजित्व नसाधयत्॥ यथा॥ **ह्रूं** **ॐ** ह्रूं वरुवदवत्येनम॥ इति नृवयाजपरा॥ ॥ ततायथाक्रमेण तां दानैक
त्वा दजयत्॥ तस्य काले॥ **ॐ** ह्रूं मूलकाशयनम॥ तताकनककृषिकीरुत्वा नृसुनयकनस्वात्मानंदवीरुवैरु
वयत्॥ मानसायवाननसं दृष्ट्वा॥ ततावाक्रमेण तत्॥ **ॐ** ह्रूं कनयूगमूलसुनायनम॥ **ॐ** ह्रूं कनयूगमूर्तिसुनायनम॥ **ॐ** ह्रूं
कायनयूगमूर्तिसुनायनम॥ **ॐ** ह्रूं कलियूगमूर्तिसुनायनम॥ चर्वजयस्वामाथर्वदत्तं इत्यादि नगलाकयात्॥ उक्ताविष्

नृदत्तान्वरसदाजिवयतासुनायनम॥ **ॐ** ह्रूं महारुद्रवासुनायनम॥ **ॐ** ह्रूं **ह्रीं** ह्रूं महानिवासुनायनम॥ अवाध
हन्तामि॥ **ॐ** ह्रूं संधूय॥ तता **ॐ** नमो॥ सर्वकर्मप्रसामान्याजिवका नवलावना॥ अतिष्ठामहाकाली नृदवाकृतवर्द्धनी
॥ दक्षीणीतमुखी दद्यात्सूर्यारुद्रा मकी स्मरत्॥ नकवशारुनीयवसुर्वीरुनगरुविनी॥ उद्गतां कनवज्रं वम्रं दक्ष
वाकृति॥ कपालयानखद्वीगं वा मन्दालकं गथा॥ विजयीकमनाङ्गी सुहृत्प्रविसन्निहा॥ अस्मदकस्य मन्त्रस्व
प्रकाशीति यदाईमा॥ विल्लाकल मन्त्रस्व अतिरूपावकवत्ता॥ निर्वर्तय ददाजीव हवातीता नृगमवना॥ अ
स्मिन्मूर्ति महादवीनववकानि दाययत्॥ इति स्थात्वा॥ **ॐ** ह्रूं अवाहनं॥ **ॐ** ह्रूं स्वयनं॥ **ॐ** ह्रूं सन्निधनं॥ **ॐ** ह्रूं नृकगुलनं॥
याज्ञस्वययत्॥ **ॐ** ह्रूं याज्ञनम॥ **ॐ** ह्रूं नृवमनीयं नमः॥ **ॐ** ह्रूं मधुयर्कस्वया॥ **ॐ** ह्रूं वननावमनीयं नमः॥ **ॐ** ह्रूं यै

[illegible]

ल म म विष्णु मर्किक नर **कूं ३** म न र उ ला क ज म ना धिय त य स्व व त्तरु सहित रूं मी पूजा व र्ति गृह्ण र स्वाहा
 ॥ व दू क व ति ४ ॥ **उं जौं श्रीं खूं** हा स स्वन न क ज धिय क ज या ला य म म सि द्वि य दा रु व सु र्व वी र्य त न क रूं मी पूजा
 व र्ति गृह्ण र स्वाहा ॥ क ज या ल व ति ४ ॥ **उं जौं श्रीं खूं कौं कौं नमः** क षा क ल क ज या ला य त्र स्य ष क क ज या ल स
 हि ता य ७ क हि सु र्व स म य न जी क न र म म सि द्वि द हि र श्री गु ष क कालिका इ या त्र व त न रूं क र क न र म न र
जौं क ४ त्र मा घ व ला य **हूं ६** हों क ४ **हौं क ४** हूं क ४ **जौं ६** स्वाहा ॥ क षा क ल क ज या ल व ति ४ ॥ **जौं श्रीं खूं कौं ४** महा
 रु त र्था महा या गि नी र्था महा मा ढ र्था महा सु र्व ख व नी र्था महा ग्म व नी र्था सु र्व महा व्या म वा सि नी र्था महा
 सु र्व म ला य का नि णी र्था सु र्व नू ज यि नी र्था रूं मी पूजा व र्ति गृह्ण र स्वाहा ॥ **हूं** ॥ सैं धू य ॥ न्ति व ति वि धि ४ ॥ ० ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

हे प्रवरागुमनमः॥१॥ अथ हे नवकालाग्रनमः॥२॥ अथ सागृककालाग्रनमः॥३॥ अथ कल
मयः॥४॥ महाप्रवरागुमनविस्तृतनिवृत्त्यापनामृतमहवाक्यं नमः॥५॥ अथ मन्त्रसाधक
हस्तगतयनामृतीदीप्ति॥६॥ पुनः॥ वीनमृतमः॥७॥ अथ संप्रदायः॥८॥ अथ दयनामृतं प्रापनदेवता
प्रज्ञाथं अंगतं नसाथं॥९॥ अथ सकलदेवतासंनिध्यकानकं शोभायसाधनं दिव्यामृतं सूक्ष्मादवा
सुदुर्लभं॥१०॥ अथ वीनप्रकाशं॥११॥ अथ वीनामृतं साधकहस्तासिंघातं॥१२॥ अथ नमः
नामृतं नकलं पुनः॥१३॥ अथ प्रवरागुमनं॥१४॥ अथ सामप्रवरागुमनं॥१५॥ अथ कलात्मनः नमः॥१६॥ अथ अमृतम
मृतां रवे अमृतं वरिणि अमृतं मावय २ अमृतं कुरु रत्ना॥१७॥ अमृतं भवति अहागदुर













